माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

(1)

20 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी (विशिष्ट)	0 0 1	हिन्दी

स्टीकर निशान ↓ से मिलाकर लगायें

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, म.प्र. भोपाल

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक 219- 5944227

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

—	1	9	2	4	6	0	6	1	0

शब्दों में

—	एक	नौ	दो	चार	छः	शून्य	छः	एक	शून्य

उदाहरणार्थ

1	1	2	4	3	9	5	6	8
एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

क :— पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 1 शब्दों में एक

ख :— परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 17

ग :— परीक्षा का दिनांक 19 | 03 | 19

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

H.S. 2019 केन्द्र क्रमांक 242012

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
Jyoti Yadav	Vandana

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टि एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
P. 9..0069	S. ... UPADHYAY 9770430

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्रा... करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	... (... में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

...में

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ. 2 के अंक = क

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (1) का उत्तर -

(i) कृष्ण के

(ii) शब्द

(iii) प्रवाजिका आत्मप्राणा

(iv) कुतरा

(v) रति

प्रश्न क्रमांक (2) का उत्तर -

(i) गाँवों में

(ii) महादेवी वर्मा

(iii) माद्री

(iv) सोलह

(v) पंचवटी

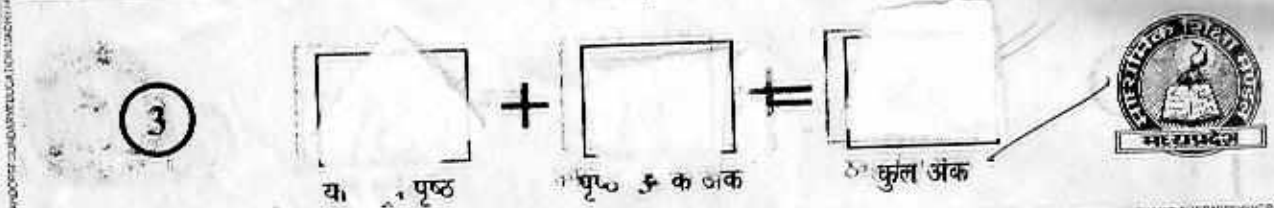

3

यो पृष्ठ + पृष्ठ के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्रमांक (3) का उत्तर-

(i) सत्य

(ii) सत्य

(iii) असत्य

(iv) असत्य

(v) असत्य

प्रश्न क्रमांक (4) का उत्तर

(अ)	(ब)
(i) पथ की पहचान	- हरिवंशराय बच्चन
(ii) श्रीकृष्ण	- सोलह कलाओं के अवतार
(iii) नर्मदा	- अमरकंटक
(iv) संधि को तोड़ना	- विच्छेद
(v) संचारी भावों की संख्या	- 33

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 4 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक(5) का उत्तर

(i) साधु से उसकी जाति नहीं पूछना चाहिए।

(ii) सम्भाजी

(iii) मार्गरेट एलिजाबेथ नोबुल

(iv) अद्वितीय

(v) वियोग श्रृंगार रस

प्रश्न क्रमांक (28) का उत्तर (ब)

(iii) आतंकवाद

रूपरेखा-

(1) प्रस्तावना
(2) आतंकवाद से आशय
(3) आतंकवाद के प्रकार-
(i) जातीय आतंकवाद
(ii) नक्सली आतंकवाद
(4) आतंकवाद के कारण
(5) आतंकवाद का राजनीति पर प्रभाव
(6) आतंकवाद का देश की सुरक्षा तथा समाज पर प्रभाव
(7) भारत और आतंकवाद
(8) आतंकवाद को रोकने के उपाय
(9) उपसंहार

6

प्रश्न क्र. प्रश्न क्रमांक(२४) का उत्तर

सेवा में,
श्रीमान जिलाधीश महोदय
भोपाल (मध्यप्रदेश)

विषय - परीक्षाकाल में ध्वनि विस्तारक यंत्रों के बजाने पर रोक लगाने हेतु।

महोदय जी,

विनम्र निवेदन है कि हम शांति कॉलोनी क्षेत्र के कक्षा दसवी के विद्यार्थी हैं। हम सभी आपका ध्यान पड़ोस के ध्वनि प्रदूषण फैलाने वाले तत्वों की ओर आकर्षित कराना चाहते हैं। इस समय हमारी माध्यमिक शिक्षा मण्डल की परीक्षाएं आरंभ हो रही हैं तथा यह समय हमारे अध्ययन का है। लेकिन पड़ोस में बजाए जाने वाले ध्वनि-विस्तारक यंत्रों के कारण हमारे अध्ययन में व्यवधान उत्पन्न हो रहा है। अतः आपसे निवेदन है कि आप परीक्षा काल में ध्वनि-विस्तारक यंत्रों के बजाने पर रोक लगाऐं।

'धन्यवाद'

दिनांक 19/03/19

भवदीय
विद्यार्थी-गण
शांति कॉलोनी

B
S
E

प्रश्न क्रमांक (26) का उत्तर

(i) शीर्षक - "परोपकार"

(ii) 'पर' के लिए सर्वस्व बलिदान करना ही सच्ची मानवता है।

(iii) वृक्ष मनुष्यों को छाया तथा फल देने के लिए धूप, आँधी और वर्षा व तूफानों में अपना सब कुछ बलिदान कर देते हैं। इस प्रकार वृक्ष हमें परोपकार का संदेश देते हैं।

(iv) सारांश - 'पर' अर्थात दूसरों के लिए अपना सबकुछ बलिदान करना परोपकार कहलाता है। परोपकार करना ही सबसे बड़ा पुण्य होता है। हमें प्रकृति से परोपकार की शिक्षा लेकर सदा दूसरो के हित के लिए कार्य करना चाहिए।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (२५) का (उत्तर-)

मैंने - - - - - - भावना है।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य - पुस्तक नवनीत के पाठ 'मैं और मेरा देश' से लिया गया है। इसके लेखक श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने कार्य करने के दृढ़ इच्छाशक्ति तथा भावना का उल्लेख करते हुए बताया है कि अच्छी भावना से किया गया कार्य हमेशा अच्छा और बड़ा होता है।

व्याख्या- लेखक कहते हैं उन्होंने जो कुछ भी अपने जीवन तथा अनुभवों से सीखा है वह यह है कि किसी कार्य का महत्व इस बात पर आधारित नहीं होता कि वह कार्य बड़ा है अथवा छोटा। बल्कि किसी कार्य महत्व इस बात पर आधारित होता है कि उस कार्य को करने की भावना कैसी है। बड़े से बड़ा कार्य भी छोटा होता है यदि उसको करने की पीछे- अच्छी भावना नहीं है और छोटे से छोटे कार्य भी श्रेष्ठ हो जाता है यदि व्यक्ति उस कार्य को अच्छी भावना से करता है। अर्थात अच्छी भावना से किया गया कार्य सदैव श्रेष्ठ व महान होता है।

विशेष- (1) सरल, सहज, बोधगम्य भाषा में विषय को समझाया गया है।
(2) भाषा में नैतिक स्वर विद्यमान है।

प्रश्न क्रमांक (२४) का उत्तर-

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक नवनीत के पाठ-'सौन्दर्य बोध' से लिया गया है। इसके कवि बिहारी हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में नायक के प्रेम में दीवानी नायिका की मनःस्थिति का वर्णन किया गया है।

व्याख्या- कवि कहते हैं कि नायक के प्रेम में दिवानी नायिका का मन किसी भी कार्य में नहीं लग रहा है। उसका मन बार-बार नायक के पास बहुत जाता है। ~~लाल~~ लाज की मर्यादा भी टूट गई है। उसका मन ~~नायि~~ नायक के अंग-अंग में बसे सौंदर्य का भौंरे की भाँति रसपान कर रहा है। अर्थात् जिस प्रकार भौंरा फूलों के समूह से मधुपान करता है उसी प्रकार नायिका का मन ~~नायि~~ नायक के अंग-अंग में बसे सौन्दर्य रूपी मधु का पान कर रहा है।

विशेष- (1) साहित्यिक ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है।
(2) दोहा छंद तथा श्रृंगार रस विद्यमान है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (23) का उत्तर

~~वासुदेव स~~
वासुदेवशरण अग्रवाल

(i) दो रचनाएँ - 'पृथ्वीपुत्र' तथा 'माताभूमि'।

(ii) भाषा-शैली = अग्रवाल जी की भाषा संस्कृत-निष्ठ खड़ी बोली है। भाषा मे तत्सम शब्दों की अधिकता है। आपने भाषा को गतिशील तथा प्रभावी बनाने के लिए मुहावरों तथा लोकोक्तियों का यथास्थान प्रयोग किया है। रचनाओं मे भाषा के मानक रूप के दर्शन होते हैं। वाक्यविन्यास तथा शब्द चयन उच्चकोटि का है। आपके निबंध प्रायः कथात्मक शैली तथा विवरणात्मक शैली मे होते हैं। इसके अतिरिक्त अग्रवाल जी ने अपनी रचनाओं में विवेचनात्मक शैली तथा गवेषणात्मक शैली का प्रयोग भी किया है।

(iii) साहित्य मेस्थान - इतिहासकार अग्रवाल जी हिन्दी साहित्य के प्रतिभाशाली निबंधकार है। आपने अपनी रचनाओं के माध्यम से साहित्य की अत्यधिक सेवा की है। हिन्दी के उच्चकोटि के निबंधकारों मे आपका प्रमुख स्थान है।

B
S
E

प्रश्न क्रमांक(xx) का उत्तर -

तुलसीदास

(i) दो रचनाएँ- ~~सम~~ 'रामचरितमानस' तथा
'कवितावली'।

(ii) भावपक्ष - भक्तशिरोमणि तुलसीदास जी उच्चकोटि के कवि थे। वे श्रीराम के अनन्य भक्त थे। उनका काव्य श्रीराम की भक्तिभावना से ओत-प्रोत है। राम के कल्याणकारी स्वरूप को प्रस्तुत कर समाज को नयी दिशा देने में आपका महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपनी रचना 'कवितावली' में श्री राम की बालसुलभ चेष्टाओं का वर्णन भी किया है।

कलापक्ष - तुलसीदास जी ने अपनी रचनाओं में ब्रज व अवधी भाषा का प्रयोग किया है। कहीं-कहीं बुंदेली भाषा के शब्द भी आ गए है। दोहा, कवित्त, सवैया, हरिगीतिका आपके बहुप्रयुक्त छंद है। आपने अपनी रचनाओं में अनुप्रास, रूपक, उपमा जैसे अलंकारों का बहुत प्रयोग किया है।

(iii) साहित्य में स्थान - तुलसीदास जी भक्ति काल के की रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि है। आप हिन्दी साहित्याकाश के सूर्य माने जाते हैं। आपके द्वारा रचित 'रामचरितमानस' हिन्दी का सर्वप्रिय महाकाव्य है।

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र. प्रश्न क्रमांक(21) का उत्तर-

रेखाचित्र- रेखाचित्र मूल रूप से चित्रकला का शब्द है। रेखाओं द्वारा बने हुए चित्र को रेखाचित्र कहते हैं। चित्र में जो काम रेखाएँ करती हैं वही काम साहित्य में शब्द करते हैं। जब लेखक शब्दों के द्वारा किसी विशेष वस्तु अथवा व्यक्ति का वर्णन इस प्रकार करता है कि आँखों के सामने उस व्यक्ति का चित्र खिंचता चला जाए तो उसे रेखाचित्र कहते हैं।

दो रेखाचित्रकारों के नाम व उनकी कृति

(1) बनारसीदास चतुर्वेदी - औरंगजेब

(2) महादेवी वर्मा - 'गिल्लू'।

B
S
E

क्र.

प्रश्न क्रमांक (२०) का उत्तर-

प्रयोगवादी काव्य की दो विशेषताएँ-

(1) नवीन उपमानों का प्रयोग- प्रयोगवादी कवियों ने अपनी रचनाओं में पुराने तथा प्रचलित उपमानों के स्थान पर नवीन उपमानों का प्रयोग किया है।

(2) रूढ़ियों के प्रति विद्रोह - प्रयोगवादी कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोह प्रकट किया है।

दो प्रयोगवादी कवि व उनकी रचनाएँ-

(1) अज्ञेय - 'हरी घास पर क्षण भर'

(2) भारत भूषण अग्रवाल - ओ

(2) नरेश मेहता - "बन पांखी सुनो"

B
S
E

पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 14 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र. प्रश्न क्रमांक (19) का उत्तर

स्थायी भाव तथा संचारी भाव में उत्तर

	स्थायी भाव	संचारी भाव
(i)	सहृदय के हृदय में स्थायी रूप से विद्यमान रहने वाले भावों को स्थायी भाव कहा जाता है।	आश्रय के चित में ~~उत्पन्न~~ उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं।
(ii)	प्रत्येक रस का एक स्थायी भाव होता है।	एक रस के एक से अधिक संचारी भाव हो सकते हैं।
(iii)	स्थायी भावों की संख्या 10 है।	इनकी संख्या 33 मानी गई है।

प्रश्न क्रमांक (18) का उत्तर - (अथवा)

(i) निराकार
(ii) प्रातःकाल
(iii) जिज्ञासा

BSE

प्रश्न क्रमांक (17) का उत्तर-

वनवास की कठिनाईयों के बीच अर्जुन ने इंद्रदेव से दिव्य शस्त्र प्राप्त किए। भीमसेन ने सुगंधित फूलों वाले सरोवर मे हनुमान जी ने भेंट की और उनका आलिंगन प्राप्त करके हजार गुना शक्तिशाली बन गए। तथा युधिष्ठिर ने मायावी सरोवर के पास स्वयं धर्मदेव के दर्शन किए तथा उनसे गले मिलने का सौभाग्य प्राप्त किया।

प्रश्न क्र.(18) का उत्तर-

महाकाव्य - "वह काव्य जिसमें नायक के जीवन का संपूर्ण चित्रण होता है महाकाव्य कहलाता है" महाकाव्य सर्गबद्ध होता है इसमें कम से कम आठ सर्ग होते हैं।

जैसे -

रामचरितमानस

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (15) का उत्तर (अथवा)

(i) सेठ ज्वालाप्रसाद अच्छे महाजन थे।
(ii) सोनू को फेल होने की आशंका है।

प्रश्न क्रमांक (11) का उत्तर -

यक्ष के संसार के सबसे बड़े आश्चर्य संबंधी प्रश्न पर युधिष्ठिर ने उत्तर दिया कि इस संसार में कितने ही प्राणियों को मृत्यु के मुख में जाता देखकर भी, बचे हुए प्राणी जो यह चाहते है कि वे अमर रहे, यह महान आश्चर्य की बात है।

B
S
F

प्रश्न क्रमांक (13) का उत्तर -

मानव जीवन में धर्म का महत्वपूर्ण तथा सर्वोपरि स्थान होता है। यदि धर्म की रक्षा असत्य से होती है तो इन परिस्थितियों मे असत्य, सत्य से बड़ा हो जाता है।

प्रश्न क्रमांक (11) का उत्तर -

~~हिन्दी की प्रथम कहानी का नाम - इन्दु~~

प्रश्न क्र. (12) का उत्तर-

तेजस्वी पुरुष लाला लाजपतराय के चरित्र की दो विशेषताएँ, उनकी वाणी तथा दूसरी उनकी कलम। इन्होंने देश की पराधीनता के समय में अपनी वाणी तथा कलम दोनों के माध्यम से देशवासियों में देशप्रेम की भावना जाग्रित की।

प्रश्न क्रमांक (11) का उत्तर (अथवा)

हिन्दी की प्रथम एकांकी 'एक घूँट' तथा उसके एकांकीकार जयशंकर प्रसाद हैं।

प्रश्न क्रमांक (10) का उत्तर (अथवा)

कबीर ईश्वर से माँगते हैं कि हे ईश्वर! मुझे इतनी धन संपत्ति दीजिए कि मैं उससे अपने परिवार का पालन-पोषण कर सकूँ। मैं भी भूखा न रहूँ तथा मेरे घर में आया हुआ साधू भी भूखा न रहे।

प्रश्न क्रमांक (9) का उत्तर (अथवा)

बिना विचारे काम करने से व्यक्ति को बाद में पछताना पड़ता है। वह अपने काम को बिगाड़ लेता है और संसार में हँसी का पात्र बनता है अर्थात् संसार में उसकी हँसी होती है।

प्रश्न क्र. प्र॰ क्र॰ (8) का उत्तर

तुलसीदास जी के मन मंदिर में अयोध्या के राजा दशरथ के चारों पुत्र राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न सदैव विहार करते हैं।

प्रश्न क्रमांक (7) का उत्तर-

भ्रामरी उसी वीर व्यक्ति का अभिनंदन करती है जिसके सिर पर असिघात का रक्त चंदन सुशोभित है।

प्रश्न क्रमांक (6) का उत्तर-

अवगुणों पर ध्यान ना देने के लिए सूरदास जी अपने प्रभु श्रीकृष्ण से प्रार्थना करते हैं।

BSE

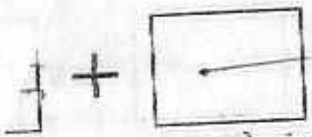

पृष्ठ 19 के अंक

प्रश्न क्रमांक (28) का उत्तर-(अ)

(iv) विज्ञान के बढ़ते चरण -

रूपरेखा -

(1) प्रस्तावना
(2) विज्ञान के बढ़ते चरण
(3) विज्ञान अभिशाप के रूप में
(4) उपसंहार

"घर-घर में फैला आज विज्ञान का प्रकाश,
करता वह दोनों काम नवनिर्माण और विनाश।"

प्रस्तावना - वर्तमान युग विज्ञान का युग है। मानव जीवन का कोई भी ऐसा पक्ष नहीं है जिसमें विज्ञान समाहित न हो। वर्तमान में विज्ञान ने पृथ्वी के मानचित्र को ही बदल दिया है। मानव ने आज अपने बुद्धि के बल पर ~~आज~~ प्रकृति को दासी बना लिया है। प्राचीन समय में मानव प्रकृति की प्रत्येक वस्तु को जिज्ञासा भरी दृष्टि से देखता था लेकिन वर्तमान में ये सभी वस्तुएँ मानव जीवन में पानी में शक्कर की तरह घुल गई हैं। आज चारों ओर विज्ञान की विजय पताका लहरा रही हैं। विज्ञान के बढ़ते चरणों के कारण आज मानव चंद्रमा तक की सतह पर अपनी विजय पताका लहरा आया है।

प्रश्न क्र.

विज्ञान के बढ़ते चरण- विज्ञान के बढ़ते चरणों ने मानव जीवन को इतना सुखमय तथा मंगलमय बना दिया है कि उसे मानव के लिए एक अमूल्य वरदान कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होनी चाहिए।

विज्ञान का ~~विज्ञान~~ महत्व निम्न क्षेत्रों में बढ़ता रहा है -

(1) चिकित्सा के क्षेत्र में- चिकित्सा के क्षेत्र में भी विज्ञान ने अभूतपूर्व उन्नति की है। आज हृदय-प्रत्यारोपण तथा काया श्रृंगार (प्लास्टिक सर्जरी) जैसी शल्य क्रियाएँ संभव हो गई है जिनके कारण मानव की जीवन प्रत्याशा में वृद्धि हुई है।

(2) आवागमन के क्षेत्र में- आवागमन के क्षेत्र में विज्ञान के बढ़ते योगदान के कारण मानव के अमूल्य समय की बचत हो रही है तथा मानव का पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक जाना अत्यंत आसान हो गया है। इसके कारण संसार बहुत छोटा हो गया है।

(3) कृषि के क्षेत्र में- विज्ञान ने कृषि कार्य को बहुत सरल बना दिया है। आज नाना प्रकार की रसायनिक खादों को पाकर खेत सोना उगल रहे हैं। कृषि उत्पादता में वृद्धि हुई है।

B
S
E

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपा[l]

2019

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का विषय: हिन्दी (विशिष्ट) | विषय कोड: 0 0 1 | परीक्षा का माध्यम: हिन्दी | परीक्षा का दिनांक: 19 3 19

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा: H.S. 1 केन्द्र क्रमांक 242012

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर: Jyoti Yadav

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर: Vandana

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक.................तक कुल प्राप्तांक [ ] + [ ] = [ ]

(4) मनोरंजन के क्षेत्र में - मनोरंजन के क्षेत्र में विज्ञान के बढ़ते चरणों के कारण मानव का मानस तृप्त हो रहा है। टीवी, रेडियो, मोबाइल फोन आदि ऐसे साधन हैं जिनमें मानव बीस-बीस घंटों तक लगा रह सकता है।

विज्ञान अभिशाप के क्षेत्र में - विज्ञान ने मानवजीवन को जहाँ सुखमय तथा सरल बनाया है वहीं दूसरी ओर वह एक विशालकाय दानव की तरह मानव को मौत की नींद सुलाने को बैचेन है। विज्ञान के आविष्कारों ने जहाँ मानव जीवन को सरल बनाया है वहीं दूसरी ओर उसे आलसी तथा अकर्मण्य बना दिया है। परमाणु बमों तथा हाइड्रोजन बमों के कारण मानव

B S E

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न क्र.

मानव का तथा एक देश दूसरे देश का शत्रु बन गया है। चारों ओर आतंकवाद का बोलबाला है। विभिन्न प्रकार की कल कलखानों से निकलने वाली विषैली गैसे प्राणवायु में मिलकर उसे प्राणघातक बना रही हैं।

उपसंहार- सोचकर देखा जाए तो विज्ञान अभिशाप नहीं मानव के लिए एक अमूल्य उपहार ही है। यह तो मानव के ऊपर निर्भर है कि वह विज्ञान का प्रयोग किस प्रकार करता है। यदि मानव स्वार्थ को त्यागकर तथा लोककल्याण के विषय में चिंतन करके विज्ञान का उपयोग करता है तो उसके जीवन सुख-संपन्नता से भर सकता है और यदि वह तनिक भी स्वार्थ के वशीभूत होकर विज्ञान का दुरुपयोग करता है तो ना केवल मानव अपितु संपूर्ण विश्व पृथ्वी के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लग जाएगा।

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

मानव का तथा एक देश दूसरे देश का शत्रु का बन गया है। चारों ओर आतंकवाद का बोलबाला है। विभिन्न प्रकार की कल कलखानों से निकलने वाली विषैली गैसे प्राणवायु में मिलकर उसे प्राणघातक बना रही हैं।

B
S
E

उपसंहार- सोचकर देखा जाए तो विज्ञान अभिशाप नहीं मानव के लिए एक अमूल्य उपहार ही है। यह तो मानव के ऊपर निर्भर है कि वह विज्ञान का प्रयोग किस प्रकार करता है। यदि मानव स्वार्थ को त्यागकर तथा लोककल्याण के विषय में चिंतन करके विज्ञान का उपयोग करता है तो उसके जीवन सुख-संपन्नता से भर सकता है और यदि वह तनिक भी स्वार्थ के वशीभूत होकर विज्ञान का दुरुपयोग करता है तो ना केवल मानव अपितु संपूर्ण विश्व पृथ्वी के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लग जाएगा।

de'Smat.

भोपाल

अतः मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे मानव को सद्बुद्धि दे कि वह विज्ञान का उपयोग लोककल्याण के लिए करें न कि स्वयं के लिए।

" मैं कहता हूँ जीओ और जीने दो संसार को
जितना ज्यादा बाँट सको तुम बाँटो जग में प्यार को "